Question:- Difference between - Construction and unconstruction interview

Ans:-

संरचित साक्षात्कार और असंरचित साक्षात्कार में अन्तर समझने से पहले हमें इन दोनों प्रकार के साक्षात्कार के स्वरूप को समझना आवश्यक जान पड़ता है। क्योंकि इसके स्वरूप की व्याख्या के व्याख्या से ही अधिक अंशों में, इसका अन्तर स्पष्ट होने लगता है। तो इन दोनों प्रकार के साक्षात्कार के सम्बन्ध में विद्वानों ने अपना विचार प्रस्तुत किया है। सबसे पहले हम संरचित साक्षात्कार पर प्रकाश डालना चाहेंगे। तो इसके सम्बन्ध में कहा गया है की संरचित साक्षात्कार का अर्थ वह साक्षात्कार है जिसमें अनुसूची का व्यवहार किया जाता है। जो पूर्व निर्मित होती है। साक्षात्कार कर्ता प्रश्नों को पूछता है और साक्षात्कार द्वारा दिये गये उत्तरों को नोट कर लेता है। इसमें विशेष प्रकार का नियन्त्रण रहता है। अर्थात अनुसूची के अतिरिक्त और प्रश्नों को न तो पूछने के स्वतन्त्रता होती है न तो वह अनुसूची की ~~शब्दावली~~ शब्दावली के भाषा आदि में परिवर्तन करने की स्वतन्त्रता होता है। इसके सम्बन्ध में (1987) में Reber ने इसकी चर्चा करते हुए कहा है। "Structured interview is any interview with a pre set - organization in which they topics, questions and their order of use are all determind in advance."

दूसरी तरफ असंरचित साक्षात्कार को अनिर्धारित भी कहा जाता है। क्योंकि इस प्रकार के साक्षात्कार में किसी भी विशेष अनुसूची की सहायता नहीं ली जाती है। साक्षात्कार कर्ता, साक्षात्कार दाता से कुछ मुख्य प्रश्न या किसी विषय पर उसके विचार पूछता है। साक्षात्कार दाता उसका वर्णन कहानी के रूप में करता है। और अपने विवेचना के आधार पर निष्कर्ष निकालता है। अर्थात साक्षात्कार के लिये पहले साक्षात्कार लेने वाला आवश्यकता के अनुसार साक्षात्कार देने वाले से कुछ प्रश्न पूछता है। और प्राप्त उत्तरो के आधार पर सूचनाएँ प्राप्त करता है। इस तरह के साक्षात्कार को चर्चा करते हुए Reber (1987) ने बताया है कि

" Unstructured interview is an interview in which the topics to be covert are left ~~unspected~~ unspecefied at The out set and Things are left to The unfolding interaction between the persone involved in The interview."

अब प्रश्न उठता है कि इन दोनो प्रकार के साक्षात्कार में क्या अन्तर है। इसके अन्तर के सम्बन्ध में विद्वानो ने निम्नलिखित पहलुओ पर अपना ~~ध्यान~~ ध्यान आकृष्ट किया है।

(1) संरचित साक्षात्कार और असंरचित साक्षात्कार में मुख्य अन्तर है कि संरचित साक्षात्कार में प्रश्नो पर नियंत्रण होता है। अर्थात जो प्रश्न पूर्व में निर्मित होता है। उन्ही प्रश्नो को उत्तरदाता से पूछा जाता है। लेकिन दूसरी तरफ असंरचित

साक्षात्कार में नियंत्रण का अभाव रहता है। इसमें प्रश्न पूर्व निर्मित नहीं होते हैं। साक्षात्कार समय ही उत्तरदाता से प्रश्न पूछे जाते हैं।

(2) संरचित साक्षात्कार में परिशुद्धता देखने मिलता क्योंकि साक्षात्कार लेने वाला प्रश्नों कि संख्या, भाषा, क्रम तथा अंकन विधि में अपनी ओर से कोई परिवर्तन नहीं करता।

दूसरी असंरचित साक्षात्कार परिशुद्धता की कमी पायी जाती है। अतः इसमें लचीलापन देखने को मिलता है। क्योंकि साक्षात्कार लेने वाला अपनी आवश्यकता या परिस्थिति के मांगों के अनुकूल साक्षात्कार कार्यप्रणाली में परिवर्तन लाकर आवश्यक सूचना प्राप्त कर सकता है।

(3) संरचित साक्षात्कार में मानक प्रश्न (Standard questions) होते हैं। उनका मानकीकरण पहले से ही हुआ रहता है। ऐसे प्रश्नों के आधार पर सही सूचनाओं को प्राप्त होने की सम्भावना अधिक होती है।

दूसरी तरफ असंरचित साक्षात्कार में Standard Question नहीं होते हैं। इसलिये सही सूचना को प्राप्त होने की सम्भावना घट जाती है।

(4) संरचित साक्षात्कार का संचालन सरल होती है। क्योंकि साक्षात्कार के समय प्रश्न पूछे जाने वाले प्रश्न उनकी संख्या उसका क्रम अंकन विधि आदि पहले निर्धारित होती है। एक अप्रशिक्षित अनुसंधान कर्ता भी संरचित साक्षात्कार का उपयोग करने में सफल होता है।

दूसरी तरफ असंरचित साक्षात्कार में अनौपचारिक प्रश्न होता है इसमें जिन प्रश्नों का व्यवहार किया जाता

उनकी रचना विधिवत तरीके से नहीं होती है। ~~इसलिये~~ ऐसे प्रश्न के आधार पर सही सूचना प्राप्त होना संदिग्ध बन जाता है।

(5) संरचित साक्षात्कार में उच्च विश्वसनीयता देखने को मिलता है। क्योंकि विभिन्न समयों इस साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त परिणामों में संगति तथा स्थिरता पायी जाती है।

दूसरी ओर असंरचित साक्षात्कार में निम्न विश्वसनीयता पाया जाता है। क्योंकि विभिन्न समयों में इस साक्षात्कार के आधार पर प्राप्त सूचनाओं में संगति स्थिरता की भारी कमी होती है।

(6) संरचित साक्षात्कार में उच्च वैधता पाया जाता है। इस साक्षात्कार Content validity के साथ-साथ भविष्य वाणी वैधता भी सन्तोषजनक पायी जाती है।

असंरचित साक्षात्कार में high validity का अभाव होता है। क्योंकि भविष्य वाणी वैधता बहुत सीमित होती है।

(7) संरचित साक्षात्कार जटिल ~~समस्याओं~~ समस्याओं के लिये उपयुक्त है। क्योंकि सामाजिक तथा शैक्षिक समस्यायें कुछ ऐसी जटिल होती है। जिसके समाधान में सहायक नहीं होती है।

दूसरी ओर असंरचित साक्षात्कार जटिल समस्याओं में काफी सहायक होती है। क्योंकि ऐसी समस्याओं के समाधान के लिये साक्षात्कार में लचीलापन होना आवश्यक था है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इन दोनों विधियों में अन्तर होते हुए भी उपर्युक्त साक्षात्कार का व्यवहार

आवश्यकता अनुसार किया जा सकता है।
शोधकर्ता अपनी समस्या के अनुसार
साधनों में से उचित विधि या विधियों
का चयन कर समस्या का समाधान कर
लेता है।